प्रभु
मानव तन में

कृपाल सिंह

कृपाल रूहानी सत्संग सभा (भबात)
1206, सैक्टर 48 बी
चण्डीगढ़

Godman
Original English Version in 1967
Published by :
Ruhani Satsang, Sawan Ashram,
Shakti Nagar, Delhi

Hindi version under the present name **'Prabhu: Manav Tan Mein'**
Published by :
Kirpal Ruhani Satsang Sabha (Bhabat)
1206, Sector 48B, Universal Enclave,
Chandigarh - 160 047 (India)
Ph.: 0172-2674206, 0172-4346346

21st August,2011 1100 copies

Printed at :
Sanjay Printers,
#404, Industrial Area, Phase -II,
Chandigarh
Phone : 0172-5017390

समर्पित

सर्वशक्तिमान परमात्मा को
जो आज तक आए सभी संत-महापुरुषों के
रूप में
कार्य करता रहा है
तथा
परम संत बाबा सावन सिंह जी महाराज को
जिनके पावन चरणों में बैठकर
लेखक ने परम पवित्र 'नाम'
का
मधुर रस पान किया

No man knoweth the Son, but the Father; neither knoweth any man the Father save the Son, and he to whomsoever the Son will reveal him.

-Mathew 11.27

Thou art the pilgrim's Path, the blind man's Eye,
The dead man's Life; on Thee my hopes rely;
If Thou remove, I err, I grope, I die.

Disclose Thy sunbeams, close Thy wings, and stay;
See, see how I am blind, and dead, and stray;
Oh, Thou, that art my Light, my Life, my Way.

-FRANCIS QUARLES

प्रकाशक की ओर से

जिंदगी में किसी जीते-जागते प्रभु प्राप्त पूर्ण महापुरुष का मिलना एक बहुत बड़ी नियामत है । जहां बाहर सैद्धांतिक तौर पर केवल प्रैक्टीकल अनुभव पा चुका होने के कारण धर्मग्रंथों के सही अर्थ समझा सकने में समर्थ है वहीं अंतरीय अनुभव के लिए वह अपने जीवन की चिंगारी देकर जीव को देहध्यास से ऊपर उठने के योग्य बनाता है । ऊपरी मंडलों में पहुंचने पर ही पता चलता है कि समर्थ गुरु वास्तव में प्रभु से एक हो चुका होता है अर्थात् मानव तन में प्रभु ही होता है ।

अब प्रश्न उठता है कि पूरे गुरु को कैसे जानें क्योंकि दुनिया तथाकथित (ढोंगी) साधुओं, योगियों, गुरुओं और महात्माओं से भरी पड़ी है। यहां पर परमसंत कृपाल सिंह जी महाराज की अंग्रेजी पुस्तक 'Godman' जिज्ञासु का पथ प्रदर्शन करती है जिसका हिन्दी अनुवाद 'प्रभु: मानव तन में' के रूप में पेश करते हुए हर्ष हो रहा है । पूरे गुरु की पहचान, समर्था, प्रभु से एकरूपता आदि के बारे में इस पुस्तक में इतनी उच्च दर्जे की व्यापक जानकारी दी गई है जिस की और कोई उदाहरण शायद ही कहीं मिलती हो ।

हम प्रभु को तब तक नहीं जान सकते जब तक वह स्वयं हमारे लैवल पर उतर कर मानव तन में प्रकट हो कर हमें अपने बारे में न बताए। संत कृपाल सिंह जी महाराज स्वयं प्रभु प्राप्त पूर्ण हस्ती थे जिन्होंने लाखों लोगों को आत्म ज्ञान का प्रैक्टीकल अनुभव दिया, इसलिए इस विषय पर उनकी यह पुस्तक अति अमूल्य तथा अचूक है । 21 अगस्त, 1974 को उनके शारीरिक तौर पर चोला छोड़ जाने के बाद भी वे अपने शिष्यों की अंतरीय मंडलों में संभाल करते हैं तथा बाहर भी रक्षा करते हैं जिस के बारे में उनके अनेकों शिष्य गवाह हैं ।

सभी लोग जानते हैं कि एक भाषा से दूसरी भाषा में अनुवाद करते समय मूल-भाव के खो जाने का खतरा हमेशा ही बना रहता है । हजूर महाराज जी की दया से अपनी ओर से भरपूर कोशिश की गई है कि पुस्तक में मूलभाव ज्यों का त्यों बना रहे परंतु यदि फिर भी अनुवाद में कहीं अंतर आ गया हो तो उसके लिए शत प्रतिशत अपनी जिम्मेदारी महसूस करते हुए हम सारे परमार्थभिलाषियों तथा महाराज जी से सनिम्र क्षमा-याचना करते हैं ।

21 अगस्त, 2011

कृपाल रूहानी सत्संग सभा (भबात)
चण्डीगढ़

लेखक के बारे में संक्षिप्त जानकारी

संत कृपाल सिंह जी 6 फरवरी, 1894 को सैयद कसरां, ज़िला रावलपिंडी (अब पाकिस्तान) में अवतरित हुए। उन्हें बचपन से ही अन्तरीय रूहानी ज्ञान प्राप्त था। 1924 में ब्यास के महान संत बाबा सावन सिंह जी के चरणों में आने से 7 साल पहले ही वे अन्तर में उनके दर्शन करते थे। आम घरेलू जीवन बिताते तथा सरकारी सेवा करते हुए भी वे सत्गुरु द्वारा बताये अनुसार आंखें बंद कर के शब्द – अभ्यास में प्रतिदिन 6 – 7 घंटे का समय देते थे। अपने सत्गुरु के चोला छोड़ने पर उनकी आज्ञानुसार 1951 में दिल्ली में उन्होंने 'रूहानी सत्संग' की स्थापना की और 1955, 1963 तथा 1972 में तीन लंबी विश्व यात्राएं कर के देश – विदेश में आध्यात्मिकता तथा मानव एकता का प्रचार किया। वे विश्व धर्म संघ के लगभग पन्द्रह वर्ष तक अध्यक्ष रहे; फरवरी, 1974 में दिल्ली में विश्व मानव एकता सम्मेलन का आयोजन किया तथा मानव एकता के लिए 1 अगस्त, 1974 को भारतीय संसद को संबोधित करने वाले वे पहले गैर – राजनैतिक व्यक्ति थे। उनके अनुसार धर्मों के बाह्य रीति – रिवाज चाहे कुछ भी हों, उन सब का अंतिम उद्देश्य प्रभु प्राप्ति है। उन्होंने इंसान को प्रभु प्राप्ति के अंतरीय ज्ञान अर्थात् ज्योति और ध्वनि का प्रैक्टीकल अनुभव कराया। वे वास्तव में सदेह प्रभु थे। 21 अगस्त, 1974 को यह महान विभूति अपने पीछे एक ऐसे परम संत की याद छोड़कर, जिसकी कथनी और करनी में राई मात्र भी फर्क नहीं था और जो शांति, सत्य, अहिंसा, सदाचार, प्रेम और नम्रता का पुंज था, अपना नश्वर शरीर त्याग कर दिव्य धारा में विलीन हो गई।

लेखक की ओर से

यह मेरा परम सौभाग्य था कि मुझे चौबीस वर्ष प्रभु रूपी मानव तन धारी महान सत्गुरु परम संत हजूर बाबा सावन सिंह जी महाराज के पवित्र चरण कमलों में बैठने और उनका प्रेम, मार्गदर्शन और संरक्षण पाने का मौका मिला।

जब सत्य का खोजी सत्गुरु के चरणों में आता है तो उसके मन में निरन्तर उठने वाले इन प्रश्नों का उत्तर मिल जाता है कि प्रभु क्या है और उसको हम कैसे पा सकते हैं।

ऐसे महापुरुषों के आने के उद्देश्य का वर्णन करना मैं अपना सौभाग्य समझता हूं। वे प्रभु का परवाना लेकर आते हैं और दुखी मानवता को नाम या शब्द की दात मुफ्त बाँटते हैं जिस से जुड़ कर जीव यानी आत्मा देहधारी वापस अपने पिता के घर जा सकता है।

अगर आत्मा अनामी प्रभु से निकली शब्द की धारा को पकड़ ले तो इसके ऊपर सवार होकर यह प्रभु के दरबार में पहुँच सकती है। अभी हमारी आत्मा पर मन और माया के इतने मोटे-मोटे पर्दे चढ़े हुए हैं कि हमारे अन्दर और बाहर चारों ओर शब्द की धुनकार मौजूद होने के बावजूद भी आत्मा इसे सुन नहीं पाती और न ही इसकी शान को महसूस कर पाती है। इंसान अपने परमपिता से कैसे अपने सम्बंध को दोबारा जोड़ सकता है?

धुर खस्मे का हुक्म भया, बिन सतिगुर चेतेया ना जाए।। (556)

(प्रभु का यह हुक्म है कि सत्गुरु की मदद के बिना उसे कोई नहीं जान सकता।)

आत्मा किसी ज़िंदा सत्गुरु के जीवनदायी स्पर्श के बिना जन्मों-जन्मों की अपनी नींद से जाग कर नाम से नहीं जुड़ सकती ।

हम जानते हैं कि :

आदि में शब्द था.....शब्द ही परमात्मा था।

और : *शब्द देहधारी हो गया और हमारे दरमियान रहा।*
(बाइबल)

अत: सत्गुरु संसार के विभिन्न धर्मों में प्रयुक्त शब्द, नाम, कलमा, आकाशवाणी, सरोशा, Word या उद्गीत होता है।

धर्मग्रंथों के प्रेमियों के लिए धर्मग्रंथों की सीमा में ही इस बात का वर्णन किया गया है।

जो पुरातन संतों की उपासना करते हैं, उनके लिए उनके अमर होने के ऐतिहासिक प्रमाण प्रस्तुत किये गये हैं।

सत्गुरु जब अपने शिष्यों के बीच विचरता हुआ विवेक, शांति, सांत्वना और प्रेरणा के वचन बोलता है या कभी प्रेममयी झिड़की देता है तो उसका शब्दों में बयान करना असंभव होता है। उसके निस्वार्थ दया परिपूर्ण कार्य और उसका महामानवीय प्रेम उसके आस पास के लोगों को पूर्णतया भरोसा दिला देता है कि उसकी सत् की शिक्षाएँ सच हैं।

पर जिन लोगों ने उसकी संगति का उपहार पाया, उनके ऊपर उसके जीवन, आचरण और दया-मेहर की अमिट छाप अंकित हो जाती है।

गुरु की दया मेहर और सँभाल जीव को उसके चरण-कमलों में आत्म-समर्पण करने और उस के शब्द या नाम के मार्गदर्शन में सदा रहने को प्रेरित करती है।

प्रभु करे कि जीवन की गुत्थी को सुलझाने की सच्ची चाह रखने वाला अथक जिज्ञासु उसके 'नाम' में सदा का विश्राम पा जाए!

कृपाल सिंह

विषय-सूची

प्रकाशक की ओर से
लेखक के बारे में संक्षिप्त जानकारी
लेखक की ओर से

अध्याय	विषय	पृष्ठ
1.	गुरु क्या होता है?	1
2.	गुरु 'शब्द' होता है	8
3.	गुरुओं के स्तर	21
4.	गुरु : एक या अनेक	26
5.	वक्त का गुरु	28
6.	गुरु की आवश्यकता	33
7.	पुरातन संत	37
8.	गुरु बिन घोर अंधियार	64
9.	ऐतिहासिक प्रमाण	68
10.	गुरु नानक से पहले और बाद	71
11.	धर्मग्रंथ और उनकी कीमत	74
12.	गुरु महामानव अथवा मानव देह में प्रभु होता है	83
13.	सत्गुरु और जीवों की निजघर वापसी	91
14.	गुरु और उसका मिशन	94
15.	गुरु और उसका काम	97
16.	गुरु और उसका कर्तव्य	99
17.	गुरु मानव तन में प्रभु होता है	102
18.	गुरुदेव	110
19.	पूरा गुरु	121
20.	पूरे गुरु को कैसे पायें और पहचानें?	123
21.	उसका (पूरे गुरु का)जीवन और आचरण	126
22.	सत्गुरु की शारीरिक बनावट	129
23.	सत्गुरु का प्रभाव	130
24.	गुरु, गुरुदेव, सत्गुरु और मालिक की एकता	148
25.	एकता का स्वरूप	151
26.	परमात्मा और सत्गुरु की आशीषें	169
27.	सत्गुरु की सँभाल	178
28.	गुरु और कंट्रोलिंग पावर	189
29.	गुरु के सामने आत्म-समर्पण	191
30.	सत्गुरु के वचन	199
31.	हमारे अन्य प्रकाशन	208

अध्याय 1

गुरु क्या होता है?

मनुष्य को पहले प्रभु की तरह बनाया गया, यह बड़ी बात है, परंतु प्रभु, मनुष्य की तरह का बन आये तो यह उससे भी बड़ी बात है....प्रभु ने स्वयं मानव की तरह हाड़-माँस का थैला पहन लिया ताकि वह इतना नाजुक हो जाये कि कष्टों का प्रभाव महसूस कर सके।

- जॉन डॉन (एक प्रसिद्ध अंग्रेज़ी कवि)

सत्गुरु को सचमुच में समझना और उसकी महानता को जानना असंभव है। हम वह दृष्टि नहीं रखते जिससे हम उस सत्य को देख सकें। एक संत ही दूसरे संत को पहचान सकता है। हम मन-इंद्रियों के घाट पर बैठी देहधारी आत्माएँ उसे बिल्कुल नहीं जान सकतीं।

आप क्या हैं, हम नहीं जानते, आप जैसा दूसरा कौन है?

फिर:

छोटा बड़े को कैसे जान सकता है? सीमित तर्क से भला असीम तक कैसे पहुँचा जा सकता है? जो कोई उस प्रभु की असीम गहराई को माप सके, वह उससे बड़ा ही होना चाहिये।

- ड्राइडेन (एक प्रसिद्ध अंग्रेज़ी कवि)

सिक्खों की दैनिक प्रभातकालीन प्रार्थना जपुजी में कहा गया है:

*एवडु उचा होवै कोइ।। तिसु ऊचे कउ जाणै सोइ।। (पृष्ठ 6)**

*श्री गुरु ग्रंथ साहब से जो उद्धरण पेश किए गए हैं उनके पीछे श्री गुरु ग्रंथ साहब का केवल पृष्ठ नंबर ही लिखा गया है, ग्रंथ का नाम नहीं लिखा जा रहा। पाठकजन इसी ग्रंथ का पृष्ठ जान लें।

(जब तक हम उस परमात्मा के स्तर पर नहीं पहुँचते, हम उसे नहीं जान सकते।)

सत्गुरु आकाश की ऊँचाइयों में उड़ने वाली चील की भाँति होता है। जो कोई चील जैसी ऊँची उड़ान भर सके और उसके मार्ग का अनुसरण कर सके, वही उसके बारे में कुछ जान सकता है, कौवे और चकवे उसके बारे में नहीं जान सकते। सत्गुरु आकाश में उड़ने वाला ही नहीं, अपितु सर्वोच्च आत्मिक मंडल का मालिक होता है; वह वहाँ से नीचे उतर कर हमारे पास आता है ताकि आकाशीय ध्वनि को हमें सुना सके और अपने आध्यात्मिक मंडलों में हमें साथ ले जा सके। जब वह धरती पर निवास करता है तब वह ऐसा विद्वान महापुरुष होता है जो उड़ता तो है परन्तु भटकता नहीं। वह दया का महासागर होता है और निजधाम तक पहुँचा होता है।

वह तीनों शरीरों— स्थूल, सूक्ष्म और कारण; तीनों गुणों — सतो, रजो और तमो; पाँच तत्त्वों—पृथ्वी, जल, वायु, अग्नि और आकाश; 25 प्रकृतियों और मन और माया, इन सभी से बहुत ऊपर होता है।

इसी लिये शम्स तबरेज़ उसका वर्णन इस प्रकार करते हैं :

ईनक आँ मुर्गा कि एशां बैज़ाहा ज़रीं कुनन्द,
कुर्राए तंदे फ़लक राहर सहर गह ज़ीं कुनन्द।
चूं बताज़न्द आफ़ताबे हफ़तमीं मैदा शवन्द,
चूं बखुसपन्द आफ़ताबों माह राबाली कुनन्द।
शम्स तबरेज़ी हज़ाराँ कोरे मादिर ज़ाद रा,
यक नज़र अज़ रहमते खुद जुमला रारहबीं कुनन्द।

(वह ऐसा पक्षी होता है जो सोने के अंडे देता है अर्थात् वह 'नाम' या 'शब्द' की अमूल्य भेंट देता है। प्रतिदिन प्रात: काल वह ऊँचे दिव्य

मंडलों में उड़ता है। जब वह दौड़ता है तो संपूर्ण सौर मंडल को पार कर लेता है और जब वह सोता है तो सूरज और चाँद के सिरहाने बना लेता है अर्थात् वह उच्चतर ज्योति में विश्राम और रमण करता है।

दूसरे शब्दों में, जब वह किसी सांसारिक कार्य में नहीं लगा होता तो वह आराम करने के लिए ऊँचे मंडलों में पहुँच जाता है।

ऐ शम्स तबरेज़! एक दया-मेहर भरी दृष्टि से वह हज़ारों जन्मान्धों को ज्योति का दर्शन करा सकता है अर्थात् संत या पीर-पैगंबर बना सकता है।)

वास्तव में ऐसे संत-सत्गुरु परमात्मा से एकमेक होते हैं, उससे जुड़े होते हैं पर उसकी आज्ञा से भौतिक संसार में उसके उद्देश्यों की पूर्ति करने आते हैं। संसार में दुखी उन आत्माओं के लिए जो परम पिता परमात्मा के साथ दोबारा जुड़ने के लिये तड़प रही होती हैं, परमात्मा को उनकी निजधाम वापसी का प्रबंध करना पड़ता है।

क्योंकि इंसान का अध्यापक इंसान ही हो सकता है, इस लिए प्रभु चुनी हुई आत्मा को कमीशन (परवाना) देकर इस दुनिया में भेज देता है ताकि वह रूहों को प्रभु का संदेश सुना सके और उन्हें वापस निजधाम ले जा सके। वह उस उद्देश्य की पूर्ति में एक माध्यम का काम करता है।

पहाड़ी की चोटी पर खड़े व्यक्ति की तरह वह यह देख सकता है कि किस हृदय में प्रभु-प्रेम की चिंगारी सुलग रही है और एक बड़े चुंबक की तरह वह ऐसे सभी इंसानों को अपने दायरे में ले लेता है और अपने मार्गदर्शन में उन्हें रूहानी रास्ते पर डाल देता है।

अपनी-अपनी पात्रता के अनुसार हर आत्मा को आध्यात्मिक लाभ मिलता है। जैसे-जैसे इंसान की ग्रहणशीलता (पात्रता) बढ़ती

जाती है, वैसे-वैसे उसे मिलने वाला रूहानी लाभ और दया भी बढ़ती जाती है। असीम आध्यात्मिक भंडार का मालिक होने के कारण वह (सत्गुरु) उसे खुले दिल से उन सभी जिज्ञासुओं को बाँट देता है जो उसे पाने की चाह रखते हैं। प्रत्येक को अपनी आवश्यकता और योग्यता के अनुसार आध्यात्मिक खज़ाना प्राप्त होता है और धीरे-धीरे जिज्ञासु उस आत्मतत्त्व के बीज को, जो उसमें बोया जाता है, अपने अंदर विकसित कर लेता है।

शेख़ मुईनुद्दीन चिश्ती फरमाते हैं :

तन मयाने ख़ल्क़ व जां नज़्दे खुदावंदे जहाँ,
तन गरिफ्तारे ज़मीन व रूह बर हफ्तआसमां।

वे (संत-सत्गुरु) संसार में निवास तो करते हैं लेकिन उनकी आत्मा हमेशा उच्चतम आत्मिक मंडलों में विचरती है। शरीर के पिंजरे में कैद रहते हुए भी उनकी आत्माएँ ऊपर के मंडलों में उड़ान भरती हैं।

मौलाना रूम भी फरमाते हैं :

औलिया रा बर क़यासे खुद मगीर,
दर नविश्तन यकसाँ आयद शेर ओ शीर।

(किसी वली-औलिया को अपनी बुद्धि के स्तर पर मत परखो क्योंकि जैसा वह दिखाई देता है, उससे वह बहुत महान होता है।)

सामान्यतया प्रत्यक्ष रूप से सभी मानव एक जैसे दिखाई देते हैं यद्यपि प्रत्येक व्यक्ति अंतरीय विकास में अलग-अलग होता है। यह वह पृष्ठभूमि है जो प्रत्येक व्यक्ति को आध्यात्मिक पथ पर चलने में सहायता करती है तथा हर व्यक्ति द्वारा उठाए गए कदम का माप निर्धारित करती है; इसी कारण प्रत्येक (लक्ष्य तक पहुँचने के लिए) अपना-अपना अलग समय लेता है।

मनुष्य के रूप में संत-सत्गुरु को पूरी तरह से नहीं समझा जा सकता। वह सत् या सच्चाई का असीम समुद्र होता है जो सृष्टि के आदि से ही, एक युग से दूसरे युग तक एक सा रहता है। जैसे परमात्मा की महानता के साथ हम पूरा न्याय नहीं कर सकते अर्थात् उस की महानता का पूरा पता नहीं लगा सकते वैसे ही हम परमात्मा के चुने हुए प्रतिनिधि के साथ भी पूरा न्याय नहीं कर पाते, उस की महानता की थाह नहीं पा सकते।

एक फारसी कवि हमें बतलाता है :

ऐ बरतर अज़ क़यास व ख़यालो गुमानो वहम,
व ज़ हरचे दीदाएम शुनीदेमो ख़्वान्दहएम।
दफ्तर तमाम गश्त व बपाया रसीद उमर,
मा हमचुनाँ दर अव्वल हर्फ़े तु मान्दह एम।

(वह परमात्मा तर्क-वितर्क, बुद्धि, संकल्प, विचार और गहन-मनन से परे है। वह देखने, सुनने, समझने की इंद्रियों की पहुँच से बहुत परे है। अगर जिंदगी भर भी कोई उसकी शान की गाथा गाता रहे तो भी उसके कुछ अंश का भी वर्णन नहीं हो सकता।)

कबीर साहब फरमाते हैं :

सब पर्वत स्याही करूँ, घोलूं समुन्दर माहि।
धरती का कागज़ करूँ, गुरु गुण लिखा न जाय।।

वह (सत्गुरु) रूहानियत का बादशाह होता है। हम संसार की दलदल में रेंगने वाले कीड़े उसको और उसकी बढ़ाई को नहीं जान सकते।

मौलाना रूम फरमाते हैं :

गर बगोयम ता क़यामत नाअते ऊ,
हेच आँरा मक्कतअ व ग़ायत मजो।

(अगर मैं अनंत काल तक परमात्मा के गुणानुवाद गाता रहूँ तो भी मैं मुश्किल से ही उसके बारे में कुछ कह पाऊँगा।)

जो कुछ भी हम उसके बारे में कहते हैं, वह बौद्धिक स्तर पर ही कहते हैं और बुद्धि का क्षेत्र बहुत ही सीमित और संकीर्ण होता है। हमारी सारी कोशिशें, जो इस स्तर पर की जाती हैं, वे उसे मान बड़ाई और बड़प्पन देने की बजाय निरादर ही देंगी क्योंकि वे उसे छोटा करके ही बतलायेंगी।

गुरु अर्जुन साहब इसी लिये फरमाते हैं :

तू सुलतानु कहा हउ मीआ तेरी कवन वडाई ।। (795)

(आप बादशाहों के बादशाह हैं और मैं आपको मियाँ-मियाँ कह कर बुलाता हूँ। इस प्रकार मैं आपको आदर न देकर आपका निरादर ही करता हूँ।)

उसको वर्णित करने के सर्वोच्च, सर्वश्रेष्ठ और सूक्ष्म बौद्धिक प्रयत्न भी ऐसे ही हैं जैसे कि एक नन्हा बच्चा माता के सामने खड़ा होकर कहे, "मां! मैं तुम्हें जानता हूँ।" बच्चा जब अपने बारे में ही कुछ नहीं जानता तो वह अपने माँ-बाप के बारे में क्या जान सकता है? माता के हृदय में बच्चे के प्रति जो गहरा प्रेम और स्नेह छुपा रहता है, बच्चे के मधुर तोतले शब्दों से उसका वर्णन नहीं हो सकता। हम भी सत्गुरु की शान को शब्दों में नहीं गा सकते क्योंकि जो सभी बंधनों और सीमाओं से परे है उसे सीमित बुद्धि द्वारा नहीं जाना जा सकता।

वास्तव में हम भाग्यशाली हैं कि जब-जब ऐसी महान आत्माएँ तथा संत-सत्गुरु संसार में प्रकट होते हैं तो वे समय-समय पर अपने बारे में

स्वयं हमें बतलाते हैं। उनके दुर्लभ वचनों से ही हम उनके द्वारा कार्य करती उनकी महान शक्तियों के बारे में कुछ जानकारी हासिल कर सकते हैं।

अनगिनत तरीकों से, किस्से कहानियों से या और दूसरे तरीकों से वे अपने बारे में हमें बतलाते हैं कि वे क्या हैं, उनका लक्ष्य (मिशन) क्या है, वे कहाँ से आए हैं और प्रभु की योजना को कैसे मूर्तरूप देते हैं।

हमें उनके पास जाकर उन्हें सुनना चाहिए जो कुछ वे अपने बारे में बताना चाहते हैं।

अध्याय 2

गुरु 'शब्द' होता है

(सत्गुरु 'शब्द' – सदेह होता है)

बाइबल में जॉन के वचन इन स्मरणीय शब्दों से प्रारंभ होते हैं :

शुरू में शब्द था, शब्द प्रभु के साथ था और शब्द ही प्रभु था। आरंभ में भी वही प्रभु के साथ था। – जान 1:1 – 2 (बाइबल)

गुरु 'शब्द' होता है या 'शब्द' – सदेह होता है।

गौसपल में कहा है :

शब्द सदेह हुआ और हमारे बीच रहा।

'शब्द' या 'Word' परमात्मा या चेतनता के महान समुद्र की मात्र एक किरण है और इसी एक किरण से सृष्टि के सारे खंड – मंडल बने और यही इन सब का आधार है।

जान की गौसपल में हम आगे पढ़ते हैं :

सभी चीज़ें उससे बनी (अर्थात् शब्द से बनीं) और उसके बिना कोई ऐसी चीज़ नहीं बनी, जो कि रची गई हो। उसमें जीवन था और जीवन इंसानों की रोशनी था। और ज्योति अंधकार में चमकती है और अंधकार इसे जानता तक नहीं। – जान 1:2 – 5 (बाइबल)

प्रसिद्ध अंग्रेज़ी कवि ड्राइडन अपनी कवितामयी कल्पना में इसे 'harmony' (संगीत धारा) कह कर संबोधित करता है :

संगीत, दिव्य संगीत से यह ब्रह्मांडीय ढांचा निर्मित हुआ। सभी स्वरों से यह गुंजारित हुआ और इसकी स्वर लहरी मनुष्य में पूर्णतया गुप्त हो गई।

गुरवाणी में हमें निम्न उल्लेख मिलता है :

सबदु गुरू सुरति धुनि चेला।। (943)

सबदु गुरु पीरा गहिर गंभीरा बिनु सबदै जगु बउरानं ।। (635)

('शब्द' गुरु है और आत्मा 'शब्द' की शिष्य है। 'शब्द' ही सत्गुरु है जो ज्ञान का भंडार है, गहिर और गंभीर है। 'शब्द' के बिना संसार अस्तित्व में नहीं आ सकता।)

बाणी गुरु गुरु है बाणी विचि बाणी अंमृतु सारे।।
गुरबाणी कहै सेवकु जनु मानै परतखि गुरु निसतारे।।(982)

('शब्द' और सत्गुरु के बीच कोई अंतर नहीं है। 'शब्द' वास्तव में जीवन का अमृत है और जो कोई जीवित सत्गुरु की आज्ञा अनुसार 'शब्द' का अनुसरण करता है, वह संसार-सागर से सुरक्षित पार हो जाता है।)

तुलसी साहब फरमाते हैं :

सुरत शिष्य शबदा गुरु मिल मारग जाना हो।
लख आकास ऊंधा कुआं ता मैं सुरत समाना हो।।

(आत्मा शिष्य है और 'शब्द' सत्गुरु है। सुरत जब 'शब्द' के साथ जुड़ जाती है, तभी प्रभु की तरफ जाने का रास्ता उसे मिलता है। वह उलटे कुएँ में प्रवेश कर आकाश में चढ़ने लगती है।)

भाई गुरदास आत्मा के बारे में कहते हैं :

सबद गुरु गुरु जाणीऐ गुरमुखि होइ सुरति धुनि चेला।।

(जब आत्मा पक्के तौर से धुनि को सत्गुरु मान लेती है, तभी वह गुरमुख बन पाती है और जान जाती है कि 'शब्द' और सत्गुरु वास्तव में एक ही हैं।)

इसी प्रकार संत कबीर जी भी फरमाते हैं :

गुरु तुम्हारा कहां है, चेला कहां रहाय।
किउं करके मिलना भया, किउं बिछड़े आवे जाय।।

(सत्गुरु कहाँ है? आत्मा कहाँ निवास करती है? ये दोनों कैसे जुड़ कर एक हो सकते हैं? क्योंकि बिना जुड़े, आत्मा को कोई सुख चैन नहीं मिलता।)

वे तब स्वयं ही उत्तर देते हैं :

गुरु हमारा गगन में, चेला है घट माहिं।
सुरत सबद मिलना भया, बिछड़त कबहूं नाहिं।।

सबद गुरु को कीजिए, बहुतक गुरु लबार।
अपने अपने स्वाद को, ठौर ठौर झकमार।।

(गुरु गगन में है और आत्मा का निवास भी वहीं है। जब दोनों मिल कर एक हो जाते हैं तो फिर उसके बाद अलग नहीं होते। 'शब्द' गुरु को ही गुरु मानो, बाकी सब बेकार हैं, वे सब अपने-अपने स्वार्थ के लिए जगह-जगह भटकते रहते हैं।)

इसी लिए 'शब्द' सृष्टि के आदि से ही जगत्गुरु है।

जिन के हृदय पवित्र हैं, वे धन्य हैं क्योंकि उनके अंदर सत्गुरु का 'शब्द' स्वयं को प्रकट करता है। यह'शब्द' ही असली संत है और जीवित मार्गदर्शक के रूप में काम कर सकता है। यह प्रभु की क्रियाशील सत्ता है और उन संत-सत्गुरुओं में जो प्रभु से एकमेक होते हैं प्रचुर मात्रा में प्रकट होती है।

समुंदु विरोलि सरीरु हम देखिआ इक बसतु अनूप दिखाई।।

गुर गोविंदु गोविंदु गुरु है नानक भेदु न भाई।। (442)

(जब मैंने जिस्म के समुद्र का मंथन किया तो एक अनूप वस्तु नजर आई। प्रभु सत्गुरु में समा गया और नानक को उनमें कोई भेद नज़र नहीं आया।)

जो शब्द की कमाई करता है उसे संत या सत्गुरु कहा जाता है। जब जीव लफ़्ज 'गुरु' की महत्ता का अध्ययन करता है, तभी उसके सामने सत्य प्रकट होता है। यह शब्द संस्कृत की धातु 'गृ' से बना है जिसका अर्थ है— 'पुकारना या आवाज़ देना।' अत: जो कोई अंदर की आवाज़ को सदा सुनता रहता है और श्रद्धापूर्वक उस आवाज़ से जुड़ा रहता है और दूसरों को उसका अनुभव दे सकता है, उसे गुरवाणी में 'गुरु' कहा गया है :

सो गुरु करउ जि साचु दृड़ावै।।
अकथु कथावै सबदि मिलावै।। (686)

(जो सत् का अनुभव कराये, जो धुन के द्वारा अवर्णनीय से मिला दे उसे सत्गुरु मानो।)

आगे फिर,

नानक साचे कउ सचु जाणु।। (15)

(ऐ नानक! वास्तव में सच्चा ही सत्य है।)

कबीर साहब फरमाते हैं:

साध हमारे सब बड़े, अपनी अपनी ठौर।
सबद पारखू जो होय, सो माथे सिर मौर।।

(सभी संतों-महापुरुषों को हम नमस्कार करते हैं क्योंकि वे सभी महान हैं परंतु जो 'शब्द' के अनुभवी हैं, वे सबसे बड़े हैं और हमारे सिर के ताज हैं।)

आगे फिर,

गुरु गुरु में भेद है, गुरु गुरु महि भाओ।
सोई गुरु नित बंदीए, जो सबद बतावै दाओ।।

(अनेक स्तर के गुरु हैं परंतु जो 'शब्द'-सत्ता का अनुभव प्रदान करते हैं वे सबसे अधिक आदरणीय हैं।)

तुलसी साहिब भी फरमाते हैं :

सबद भेद साखी लखे सोई संत सुजाना हो।
अगम निगम को चीन्ह के बानी पहचाना हो।।

(जो 'ध्वनि' को प्रकट कर सकता है वास्तव में वही संत है। वह आत्म-निरीक्षण के द्वारा अंतरीय 'शब्द' का अनुभव कर रहा होता है।)

कबीर साहब ने ललकारा है कि जो अपने आप को संत-सत्गुरु कहलाता है वह इतनी योग्यता तो रखने वाला हो कि हमें गुप्त 'शब्द' का अनुभव करा सके, उसे हमारे अंदर प्रकट कर सके।

भाई रे कोई सतिगुर संत कहावे, नैनो अलख लखावे।।

सारबचन में कहा गया है :

गुरु सोई जो शब्द सनेही। शब्द बिना दूसर नहिं सेई।।

शब्द कमावे सो गुरु पूरा। उन चरनन की हो जा धूरा।। (16:1:5)

(सत्गुरु 'शब्द' का संदेश सुनाता है। वह 'शब्द' के सिवाय किसी अन्य की उपासना नहीं करता। पूरा सत्गुरु हमेशा ही 'शब्द' में तल्लीन रहता है। 'शब्द'-सनेही सत्गुरु के चरण-कमलों की तू धूलि बन जा।)

सत्गुरु सच्चा 'वेद'होता है। वह सच्चे नाम (सत्नाम), 'शब्द' ध्वनि से एकमेक होता है, उसका मूर्तरूप होता है और इस तरह से जीवन के अमृत रस को अपने अंदर संजोये रखता है। वह 'शब्द' को बाँटता है जो दिव्य मंडलों में जाने के लिए चाबी का काम करता है और आत्मा बे-रोकटोक रूहानी रास्ते पर चलने लगती है।

थ्योसोफिकल सोसायटी वाले इसे 'ख़ामोशी की आवाज़' ('The Voice of the Silence') कहते हैं जिसकी गुंजार एक मंडल से दूसरे मंडल तक लगातार सुनाई देती रहती है।

संतों की परिभाषा में सच्चा संत वही है जो 'शब्द' का अनुभव और शिक्षा-दीक्षा दे सके। अनुभवी महापुरुष की सहायता के बिना किसी को भी 'शब्द' या 'नाम' की दात नहीं मिल सकती। इसकी तुलना हम उस रस्सी की सीढ़ी से कर सकते हैं जो सीधी परमात्मा तक पहुँचती है और सुरत इसे पकड़ कर आसानी से प्रभु की तरफ चढ़ जाती है।

सबदि मिलहि ता हरि मिलै सेवा पवै सभ थाइ।। (27)

('शब्द' के साथ संपर्क होना प्रभु के साथ संपर्क होना है और जो कोई अपने अंदर 'शब्द' का सम्पर्क करता है, वह धन्य है।)

आगे फिर,

गुर महि आपु समोइ सबदु वरताइआ।।
सचे ही पतीआइ सचि समाइआ।। (1279)

(गुरु में मालिक स्वयं शब्द के रूप में समाया हुआ है और शब्द का प्रसार कर रहा है।)

और फिर,

नानक आदि अंगद अमर सतिगुर सबदि समाइआ।।
धनु धनु गुरु रामदास गुरु जिनि पारसु मिलाइआ।। (1407)

(ऐ नानक! शुरू से ही सभी संत 'शब्द' में लीन रहते हैं। सत्गुरु रामदास भी धन्य हैं क्योंकि उन्हें भी 'शब्द' का सम्पर्क मिल चुका है।)

पवित्र बाइबल में कहा गया है:

शब्द सदेह हुआ और हमारे दरमियान आकर रहा।

हमें 'शब्द' के अनुभवी महापुरुष से ही सच्चे जीवन का अंश मिलता है। वह स्वयं सत् जीवन की धारा जिससे कि सभी जीव जीवन पाते हैं, के साथ जुड़ा होता है । वह अंहकार-रहित मंडल का वासी होता है, 'शब्द'-सदेह होता है। वह 'शब्द' के अंदर निवास करता है और 'शब्द' ही उसका अस्तित्व होता है। काल या समय की सीमा से बहुत ऊपर उठ कर वह अमर जीवन पा जाता है और जो कोई उससे संपर्क करे और उसकी शिक्षाओं और आदेशों पर चले, वह भी इस अनुभव को पा सकता है।

वर्तमान हालत में मनुष्य की आत्मा माया के भारी बोझ से दबी हुई है। उसे यह भी पता नहीं कि वह आत्मा है। 'शब्द' के अभ्यास से ही उसे अपनी महानता का अनुभव होता है और परम सत्य का पता चलता है। यह जीवनदायी 'शब्द' हम सब के अंदर पहले ही मौजूद है लेकिन है गुप्त अवस्था में।

आत्मा ने इसको सुनना है ताकि यह इसके ('शब्द' के) स्पर्श से अपनी बहुमूल्य आध्यात्मिक विरासत के प्रति चेतन्य हो जाए और उसे अपना ले।

आत्मा का 'शब्द' के साथ यह संबंध सत्गुरु के द्वारा ही जोड़ा जा

सकता है क्योंकि वह सत्गुरु 'शब्द' सदेह होता है; कोई दूसरा ऐसा नहीं कर सकता।

पराई अमाण किउ रखीऐ दिती ही सुखु होइ।।
गुर का सबदु गुर थै टिकै होर थै परगटु न होइ।। (1249)

(सत्गुरु के पास 'शब्द' रूपी ख़ज़ाना एक पवित्र धरोहर के तौर पर मौजूद होता है जिसे वह विवेकपूर्ण ढंग से बाँटता है। सत्गुरु के 'शब्द' को कोई सत्गुरु ही प्रकट कर सकता है, उसके सिवाय कोई समर्थ नहीं)

इसका अर्थ है कि 'शब्द' सत्गुरु के नियंत्रण में होता है। केवल वही आत्मा को इंद्रियों से ऊपर खींचकर 'शब्द' को प्रकट कर सकता है।

'शब्द' का यह सम्पर्क सत्गुरु की महान भेंट है। 'शब्द' जैसी असीम तथा अमूल्य दात की बराबरी कितने ही महान कार्य, जो समय व स्थान की सीमा के अंदर किए गये हों, नहीं कर सकते।

हमारे सभी शुभ कर्म फटे-पुराने चिथड़ों के समान हैं।

और फिर,

कर्मों के कानून के अनुसार कोई भी देहधारी अधिकारी नहीं है।

सत्गुरु अगर चाहे तो अपनी करुणा और कृपा के द्वारा 'शब्द' की दात प्रदान कर सकता है।

जिस क्षण कोई असहाय बच्चा अपनी माता की तरफ जाने की कोशिश करता है तो वह प्यार से उसकी तरफ दौड़ती है, कोमलता से उसे उठा लेती है और प्यार से अपने सीने से लगा लेती है।

घाल न मिलिओ सेव न मिलिओ मिलिओ आइ अचिंता।।
जा कउ दइआ करी मेरै ठाकुरि तिनि गुरहि कमानो मंता।।
(672)

(अपनी कोशिशों से अथवा सेवा से इसे प्राप्त नहीं किया जा सकता परन्तु जो पूरी तरह उसके हवाले हो जाये उसे उसका अनुभव प्राप्त हो सकता है। प्रभु की महान कृपा के द्वारा ही साधक, सत्गुरु की आज्ञा व आदेशों को मानना प्रारंभ करता है।)

इसका यह मतलब नहीं कि व्यक्ति अपनी कोशिश करना ही छोड़ दे। इसके विपरीत उसे सत्गुरु के हुक्म के अनुसार पूरा प्रयत्न करते रहना चाहिए। फिर भी सफलता केवल सत्गुरु की दया पर ही निर्भर करती है क्योंकि प्रभु की कृपा किस पर, कितनी और कैसे हो, इसका निर्णय केवल सत्गुरु ही करता है।)

ईसा कहता है :

यदि आप मुझ से प्यार करते हो तो मेरा कहना मानो।

इस मार्ग पर चलने के लिए सत्गुरु के हुक्म के अनुसार जीवन बनाना अत्यंत आवश्यक है।

जिन कउ सतिगुरु भेटिआ से हरि कीरति सदा कमाहि।।
अचिंतु हर नामु तिन कै मनि वसिआ सचै सबदि समाहि।।
(582)

(जो सत्गुरु का पूर्णतया अनुसरण करता है वह दिव्य कीर्तन को हमेशा सुनता है। ज्यों-ज्यों 'नाम' का अनुभव बढ़ता जाता है, साधक उसी में लीन होता जाता है।)

यद्यपि अनहद बाणी या 'नाम' ('शब्द') हमारा जीवन है तथापि हम अपने आप उसे प्रकट नहीं कर सकते, सुन नहीं सकते। उस तक

पहुँचना केवल मुर्शिदे – कामिल या संत – सत्गुरु के द्वारा ही संभव है।

अनहद बाणी पूंजी।। संतन हथि राखी कूंजी।। (893)

(अनहद बाणी का ख़ज़ाना संतों के द्वारा मिलता है।)

बिनु गुर नामु न पाइआ जाए।।
सिध साधिक रहे बिल्लाइ।। (115)

(गुरु के बिना सिद्ध और साधक भी 'नाम' से खाली रह जाते हैं।)

'शब्द' संतों का भी जीवनाधार है और अन्य प्राणियों का भी। अंतर यह है कि संतों को 'शब्द' का चेतन अनुभव होता है जबकि अन्य जीव बेख़बरी की हालत में रहते हुए इस अनुभव से खाली रहते हैं। संतों के अंदर उसका (प्रभु का) पुत्र होने का केवल अनुभव ही नहीं होता बल्कि वे असलियत में ऐसा ही जीवन जीते हैं, पर बाकियों में इस प्रकार का कोई विचार तक नहीं उठता।

ईसा कहता है :

मैं परमात्मा का पुत्र हूँ। मैं और मेरा पिता एक हैं। जो कुछ मैं कहता हूँ, उसे मेरा पिता कहलवाता है।

गुरवाणी में भी हमें इसी तरह के संदर्भ मिलते हैं :

हरि सो किछु करे जि हरि किआ संता भावै।।
कीता लोड़नि सोई कराइनि दरि फेरु न कोई पाइदा।।
(1076)

(हरि वही करता है जो उसके संत चाहते हैं। जो कुछ संत चाहें, वह अवश्य घटित होता है, उनकी इच्छा को कोई नकार नहीं सकता।)

पिता पूत एके रंग लीने।। (1141)

(पिता और पुत्र दोनों एक ही रंग में रंग गये हैं।)

मौलाना रूम हमें बतलाते हैं :

औलिया रा हस्त कुदरत अज़ अल्लाह।
तीर जस्तह बाज़ आरन्दश ज़ राह।।

(औलिया इतना समर्थ होता है कि परमात्मा के चलाए तीर की दिशा बदल दे।)

इसका मतलब यह नहीं कि संत परमात्मा के अधिकार क्षेत्र को किसी प्रकार की चुनौती देते हैं या अपनी कोई समानांतर सरकार चलाते हैं बल्कि इसके उलट वे तो उसके प्रतिनिधि के रूप में काम करते हैं और उसके काम को आगे बढ़ाते हैं। परमात्मा संसार में उनके द्वारा अपना कार्य करता है।

क्योंकि वे अहम्भाव से ऊपर होते हैं, इसलिए वे प्रभु सत्ता के उपयुक्त माध्यम बन जाते हैं। 'शब्द' के साथ गहराई से जुड़े होने के कारण वे प्रभु से सीधे संदेश लेते हैं और उस तक संदेश पहुँचाते हैं और सांसारिक संबंधों में वे सचमुच देहधारी – प्रभु होते हैं।

पलटू घर महि राम के, अवर न करता कोय।
नाम सनेही संत हैं, वे जो करैं सो होय।।

मौलाना रूम इसके बारे में इस तरह से फरमाते हैं :

औलिया इतफ़ाले हक़ अन्द ऐ पिसर।
हाज़री व ग़ायबी अन्दर नज़र।

(औलिया लोग प्रभु के चुने हुए होते हैं। संसार में जो कुछ दृश्य या अदृश्य है, उन्हें सब कुछ मालूम होता है।)

फिर, परमात्मा संतों के द्वारा बोलता है :

जैसी मै आवै खसम की बाणी तैसड़ा करी गिआन वे लालो ।।
(722)

(नानक कहते हैं, ऐ लालो! जैसा प्रभु मुझ से कहलवाता है, मैं वैसा ही कहता हूँ। साधु ही प्रभु का मुख होता है।)

प्रभु इस संसार में दुखी मानवता के लिये मनुष्य की शक्ल में आता है और उन पर दया करते हुए उन की कमियों और पापों की भारी ज़िम्मेवारी अपने ऊपर ले लेता है।

देखो, प्रभु तुम्हारे मानवीय रूप में उतर रहा है; दुष्कर्मियों के नाम पर जो दुष्कर्म व कष्ट किये जाते हैं, उन्हें और तुम्हारे सारे बुरे कर्मों को वह अपने ऊपर ले लेता है और अपने सभी सदकर्मों को वह तुम्हारे ऊपर डाल देता है, तुम्हारे अंदर भर देता है। –ड्राइडेन

गलती के पुतले इंसान के लिए जीवित सत्गुरु ही मात्र एक आशा की किरण होता है, उसके भटकते कदमों के लिये वह मार्गदर्शक रोशनी है और पापियों को वह बचाने वाला है। असीम 'नाम' या 'शब्द' की सहायता से, जिसका कि वह विस्तृत भंडार होता है, वह जीवों को संसार सागर से सुरक्षित पार करा देता है तथा उन्हें अमर जीवन प्रदान करता है।

अंतर में वह 'शब्द' से जुड़ा होता है और बाहरी रूप से वह एक अध्यापक या गुरु का काम करता है और जिज्ञासुओं को इस भौतिक संसार में आध्यात्मिक निर्देश देता है और उसके बाद उन्हें सूक्ष्म व कारण मंडलों और उसके आगे ले जाता है। जैसे-जैसे जीव

आध्यात्मिक पथ पर आगे बढ़ता है वह (सत्गुरु) कदम-कदम पर उसका मार्गदर्शन करता है। वह तब तक विश्राम नहीं लेता जब तक साधक को उसके निज घर (जहाँ से शब्द का निकास हुआ) नहीं पहुँचा देता। जिसने सत्पुरुष को जान लिया, वह सत्गुरु होता है। वह काल और महाकाल, प्रलय या महाप्रलय, दोनों के प्रभाव से परे होता है और जिज्ञासु को भी इस अवस्था तक पहुँचाने में समर्थ होता है। इस स्तर का गुरु ही जीवों को बचा सकता है, दूसरा कोई नहीं।

सति पुरखु जिनि जानिआ सतिगुरु तिस का नाउ।।
तिस कै संगि सिखु उधरै नानक हरि गुन गाउ।। (286)

(जो सत् में समाया हुआ है, वही सत् का सत्गुरु है। वह जीव-आत्माओं को बंधन से छुड़ा सकता है और नानक उसी का गुणानुवाद करता है।)

यह कहना अधिक उचित और अच्छा होगा कि प्रभु मानवता को बिना रास्ता दिखाये नहीं छोड़ता।